THEORY OF DEMOGRAPHIC TRANSITION (6.9(a))

जनसंख्या संक्रमण का सिद्धांत जनसंख्या के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में एक है। जिसमें हाल के वर्षों जनांकीय इतिहास के आंकड़ो एवं समंकों (statistics) का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग किया गया है। मूल रूप में इस सिद्धांत को W.S. Tompsan एवं Frank W. Notes-tein ने 1945 में प्रस्तुत किया था। इन्होंने अपना तर्क एवं विचार यूरोप आस्ट्रेलिया, एवं उत्तरी अमेरिका महादेश के जनन एवं मृत्यु दर की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए व्यक्त किया था। दूसरे शब्दों में जनसंख्या संक्रमण का सिद्धांत उपरोक्त तीन महादेशों के जन्म एवं मृत्यु दर पर आधारित था।

'Transition' शब्द दो अवस्थाओं के बीच की स्थिति को प्रकट करता है। जनसंख्या सिद्धांत में भी इसका इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है। जैसा कि ज्ञात है जनसंख्या के उद्भव एवं विकास की कई अवस्थायें होती है। इनमें दो अवस्थाओं के बीच के स्थिति को Demographic Transition कहा जाता है। जनसंख्या संक्रमण सिद्धांत उच्च जन्म एवं उच्च मृत्यु दर से निम्न जन्म एवं निम्न मृत्यु वाली एक खास जनांकीय परिवर्तन प्रतिरूप को प्रदर्शित करता है जब कोई बड़ा ग्रामीण कृषि प्रधान अशिक्षित समाज एक नगर प्रधान औद्योगिक एवं आधुनिक समाज में बदलता है। इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है–

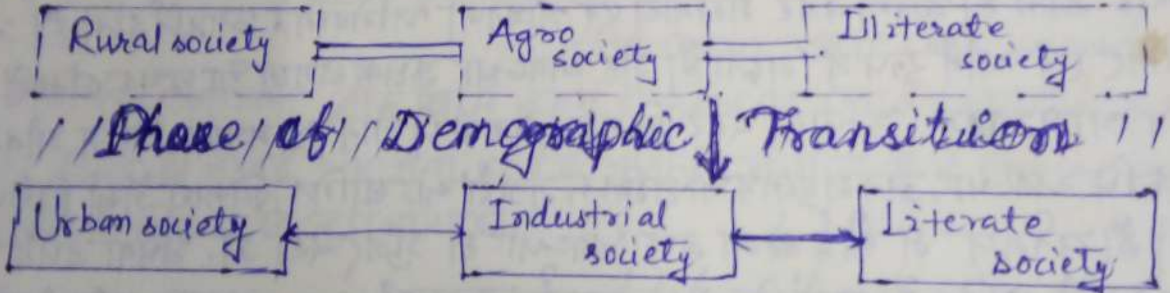
Rural society
Agro society
Illiterate society
// Phase of Demographic Transition //
Urban society
Industrial society
Literate society

जनांकीय परिवर्तन की इस अवस्था में निम्नांकित तीन तथ्य स्पष्ट रूप से शामिल होता है:-

I मृत्यु दर में गिरावट जन्म दर गिरावट से पहले आती है-

II मृत्यु दर से सामंजस्य स्थापना हेतु स्वाभावतः (virtually) जन्म दर में भी गिरावट आ जाती है

III समाज का सामाजिक-आर्थिक-परिवर्तन इसके जनांकीय परिवर्तन के साथ-साथ चलता है:.

आज विश्व के विभिन्न देश जनसंख्या संक्रमण के अलग-अलग अवस्थाओं पर स्थित है। डीवार्थो के मतानुसार ऐसा मुख्यतः मानव की दोहरी प्रकृति के कारण होता है। जैविक रूप में हर जगह समान होने के बावजूद सांस्कृतिक भिन्नता के कारण वे अलग-अलग जगहों पर भिन्न-भिन्न जनन प्रतिरूप विकसित कर लेते हैं जिससे एक ही समय में संसार में जनसंख्या संक्रमण के अलग-अलग अवस्थाएं मिलती है।-

जनसंख्या संक्रमण सिद्धांत की प्रमुख विशेषता इसकी स्पष्ट सं अवस्था है। उच्च जन्म एवं मृत्यु दर से निम्न जन्म एवं निम्न मृत्यु दर के बीच का संक्रमण काल 4 अवस्थाओं में बाँटा जाता है जिसमें प्रत्येक की अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं।

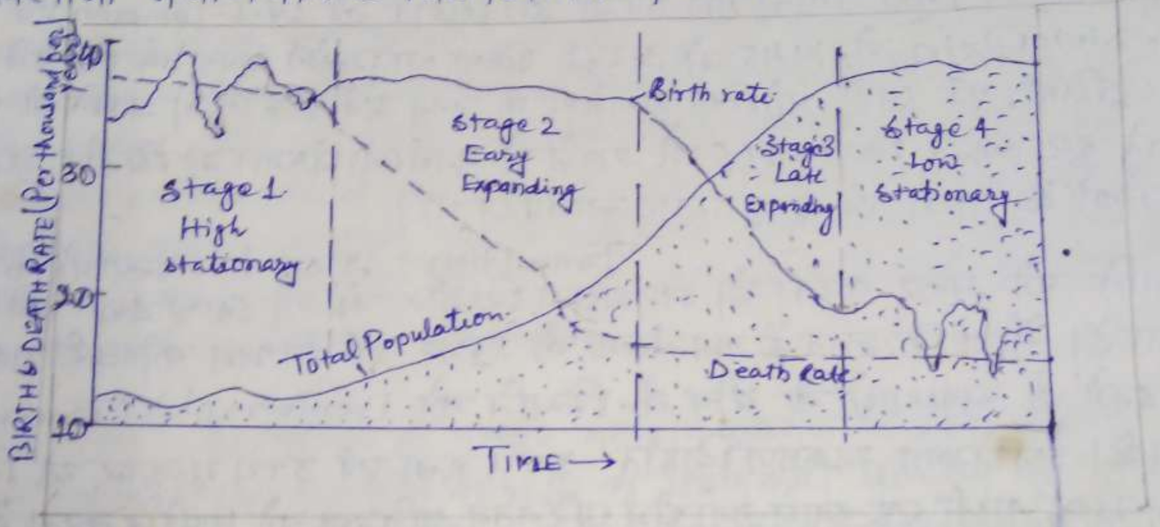

STAGE 1: → High and Fluctuating birth and death rate and slow population growth.

प्रथम अवस्था में जन्मदर 35 व्यक्ति प्रति हजार एवं मृत्यु दर इससे अधिक होता है। इसकी वजह महामारी एवं भोजन की अनियमित आपूर्ति होती है। जनसंख्या लगभग स्थिर एवं धीमे रूप में बढ़ता है। यह अवस्था कृषक समाज का सूचक होता है जहाँ जनघनत्व कम, ग्रामवास, उत्पादन स्तर निम्न, तकनीकी ज्ञान का अभाव, निम्न जीवन प्रत्याशा, आरंभिक कृषि अवस्था, जन समुदाय अशिक्षित, नगरों का सीमित विकास जैसी विशेषता पायी जाती है। वर्तमान में कोई देश इस अवस्था से गुजर रहा है, अथवा इसमें है, यह कहना काफी कठिन है। क्योंकि ऐसे देश के जन्म एवं मृत्यु दर के आँकड़े विश्वसनीय नहीं होंगे और दूसरे तकनीक का प्रसार खासकर औषधि के क्षेत्र में इतना तीव्र रहा है कि विश्व का शायद ही कोई देश इसके प्रभाव से आने वाली मृत्यु दर में गिरावट से अछूता रहा हो। अतः इसे Pre-Industrial या Pre-modern Stage कह जा सकता है।

STAGE 2 High birth rate and declinig death rates and Rapid population growth.

जनसंख्या संक्रमण की द्वितीय अवस्था की मुख विशेषता उच्च ~~मृत्यु~~ जन्म दर में आंशिक गिरावट (30 व्यक्ति प्रति हजार) एवं मृत्यु द दर में तीव्र गिरावट (15 व्यक्ति प्रति हजार) होती है। इस काल में स्वास्थ्य एवं सफाई सुविधा में सुधार होने से मृत्यु दर में काफी गिरावट तो आ जाती है किंतु जन्म दर ऊँचा ही बना रहता है। कम से कम द्वितीय अवस्था के प्रारंभिक काल

तो नहीं दीखता है। द्वितीय अवस्था के उत्तरार्ध में जन्म दर में धीमी गिरावट के चिन्ह दीखाई देते हैं।

समग्र रूप में द्वितीय अवस्था में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ता है। 'जनसंख्या विस्फोट' के इस परिदृश्य में संसाधन इकट्ठा करने वाली जनसंख्या का महत्व अधिक हो जाता है। लोगों का जीवन औसत जीवन आयु में सुधार आने लगता है। औद्योगिकरण नगरीकरण एवं आधुनीकीकरण की प्रक्रिया महत्वपूर्ण हो जाती है। परिणामत: जन्म दर में गिरावट आने लगता है। विश्व के अनेक अल्प विकसित देश जनसंख्या संक्रमण के इस विस्फोटक दौर से गुजर रहे हैं। क्योंकि औषधि एवं स्वच्छता के उपाय के अत्यधिक प्रचार ने मृत्यु दर की तीव्रता से कम कर दिया है किंतु उनकी जन्म दर ऊंची बनी रहती है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, ईरान, यमन जैसे देश second stage के उत्तरार्ध काल में हैं, जहां जन्मदर में धीरे-धीरे गिरावट आने लगी है। किंतु मृत्यु दर की गिरावट अधिक होने से यहां जनसंख्या का तीव्रता से वृद्धि हो रही है।

THIRD STAGE: Declining death rate and declining birthrate and declining rate of population growth:-

तृतीय अवस्था अथवा Late expanding phase की- विशेषता जनसंख्या वृद्धि दर में ह्रास की प्रवृत्ति का होना है। कारण कि मृत्यु दर निम्न स्तर पर स्थिर हो जाता है और जन्म दर गिर जाता है। जन्मदर में ये गिरावट नगरीय / औद्योगि समाज के विकास से जुड़ा होता है।

FOURTH STAGE: "Low birth and death rate and slow population growth."

जनसंख्या संक्रमण के अंतिम अवस्था में जन्म एवं मृत्यु दर में काफी गिरावट आ जाती है। जनसंख्या आकार या तो स्थिर हो जाता है अथवा धीमे गति से वृद्धि करता है। इस अवस्था में जनसंख्या का काफी नगरीयकरण एवं औद्योगीकरण हो जाता है। तकनीकी ज्ञान सर्वत्र फैला होता है, स्वैच्छिक रूप से परिवार के आकार पर नियंत्रण एक सामान्य बात होती है। साक्षरता एवं शिक्ष का स्तर काफी ऊंचा होता है और श्रमिक के विशिष्टीकरण का स्तर काफी ऊंचा होता है। आंग्ल अमेरिका, पश्चिमी यूरोपीय देश, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, हांगकां एवं जापान जैसे देश समझे जाते हैं कि जनसंख्या संक्रमण के इस अवस्था प्राप्त कर चुके हैं।

Birth and death rates apparmentaly equal Which in time results in zero population growth.

आलोचना:- कई स्तर पर जनांकीयवेत्ता द्वारा सराहे जाने के बावजूद यह सिद्धांत कई स्तर पर आलोचना का शिकार हुआ है। पहला यह कि यह सिद्धांत यूरोप, अमेरिका एवं आस्ट्रेलिया जैसे पाश्चात्य संस्कृति वाले देशों के आनुभविक पर्यवेक्षण (impirical observation) पर आधारित है। टाल्की एवं विल्ड्कोस ने इसे न तो Predictive और न इसके अवस्थाओं को क्रमिक एवं महत्वपूर्ण माना है। उदाहरण स्वरूप चीन ने अपने एक एक बच्चे नीति को स्वीकार कर ही संक्रमण के तृतीय अवस्था में पहुंच गया है। इस तरह से मानव के तकनीकी अन्वेषण खासकर स्वास्थ्य के क्षेत्र में, को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। जो मृत्यु दर को काफी नियंत्रित कर सकता है.

Conclusion:- कुछ कमियों के बावजूद जनांकीय संक्रमण सिद्धांत मोटे तौर पर विश्व के साधारणीकृत जनांकीय इतिहास का प्रभावकारी प्रतिरूप पेश करता है। ऐसे प्रतिरूप से किसी को ये अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि संक्रमण का कोई प्रतिमानक समय की अवधि होगी अथवा जननता एवं मर्त्यता का प्रतीकात्मक क्रम होगी अथवा प्रत्येक अवस्था में प्रतीकात्मक सामाजिक-आर्थिक संरचना होगी। चूंकि अनुभाविक साधारणीकरण पश्चिम के जनांकीय पद्धति पर आधारित था, यह सिद्धांत किसी भी देश के संक्रमण प्रक्रिया को समझने में मदद अवश्य करता है बशर्ते कि situational context को उचित रूप से समझा गया हो। यह आशा करना भी अनुचित होगा कि विश्व के सभी देश उसी क्रमागत का अनुकरण करें जैसा यूरोपीय देशों में हुआ था।